# श्री शत्रुंजय - मुक्ति सम्यग्ज्ञान अभ्यासक्रम

**प्रथम वर्ष - अभ्यास - ४**

सप्टेम्बर 2019

गुणांक - १००

## प्रश्न - पत्र

सूचना : १. नाम और एनरोलमेंट नंबर बिना का पेपर रद्द किया जायेगा । २. लाल स्याही के पेन का उपयोग न करें । ३. समझ में न आये ऐसे अक्षरों वाले जवाब पत्र जांचे नहीं जायेंगे । ४. जवाब पत्र में ही योग्य खाने में जवाब लिखना है, साथ में दूसरा पेपर जोडना नहीं है, जोडने पर तीन मार्क्स काट लिये जायेंगे । ५. जवाब पत्र हर महिने की ता. २५ तक भेजना जरुरी है, आगे-पीछे आए पेपर जांचे नही जायेंगे । ६. सभी जवाब अभ्यासक्रम के आधार पर ही लिखना है । ६. जिस महिने का प्रश्न पत्र है, उसके बाद के महिने की २५ ता. को आपके मार्क्स तथा सही उत्तर इन्टरनेट पर दे दिये जायेंगें, उसके बाद आए हुये उत्तर पत्र स्वीकृत नहीं होंगे तथा फोन पर जवाब नहीं दिया जायेगा ।

**प्रश्न नं. १ रिक्त स्थान की पूर्ति करो -** २०

१. जैसे जैसे ..... शांत होते जाते हैं, वैसे वैसे जीव सौम्य प्रकृतिवाला बनता है ।
२. जिसका परिवर्तन हो, अवस्था बदल जाये वो ..... ।
३. ..... के समय में स्वयंभु वासुदेव हुए ।
४. मन दुर्बल होता है तो ..... के मनोरथों मे कमी आ जाती है ।
५. कोई भी आहार पानी जिन्हे हमने झुठे किये हो उनमे ४८ मिनिट के पश्चात ..... उत्पन्न होते है ।
६. संसार सुख से व्यतीत होता था, पर सब बराबर चले तो ..... संसार को असार क्यों कहते ?
७. कायोत्सर्ग की प्रतिज्ञा ..... पदो में है ।
८. ..... प्रभु भद्धिलपुर में केवलज्ञान पाये ।
९. हम अनादि काल से ऐसी .....के कारण अपने परोपकारी को भी पहचान नहीं पाते ।
१०. हमारी आत्मा ..... के उपयोग से कठोर बनती है ।
११. जाने आने की क्रिया करते जीवों की जो विराधना हुई हो उसका प्रतिक्रमण ..... सूत्र से किया जाता है ।
१२. श्रावक का जीवन ..... के उपयोग के बगैर नहीं चल सकता ।
१३. धर्म रत्न पाने के लिए ..... की आवश्यकता है ।
१४. तीर्थंकर परमात्मा को ही ..... रुप हो सकता है ।
१५. मेथी वगैरह के सुखाये पत्तों में छोटे छोटे सूक्ष्म ..... जीवों का निर्माण होता है ।
१६. ..... प्रभु के शासन रक्षक किन्नर यक्ष और पन्नगा यक्षिणी थे ।
१७. यश और कीर्ति ..... के उदय से मिलती है ।
१८. प्रतिक्रमण का बीज .....इन तीन पदों को माना जाता है ।
१९. ..... वाले जीव श्रावक जीवन में शांति फैलाते है और परंपरा से केवलज्ञान पाते हैं ।
२०. महासुदि दूज को ..... प्रभु केवलज्ञान पाये ।

**प्रश्न नं. २ एक शब्द में जवाब लिखो -** १५

१. किस सूत्र से आगार पूर्वक काउस्सग्ग किया जाता है ?
२. जहाँ बुद्धि की निपुणता न हो वहाँ क्या संभवित नहीं है ?
३. कौन से प्रभु पचास हजार पूर्व वर्ष कुमारावस्था में रहे ?
४. मनुष्य गति के किसी भी एक भव में जन्म से मृत्यु तक टिकाकर रखने वाला कर्म कौन सा ?
५. कायोत्सर्ग याने क्या ?
६. थाली धोकर पीने के पीछे कौनसा रहस्य छुपा हुआ है ?
७. सभी दानों का राजा कौन ?
८. अरिहंत परमात्मा के आठ प्रातिहार्य किसमें बताये गये है ?
९. हड्डियों की मजबूत रचना अथवा शरीर की शक्ति को क्या कहते है ?
१०. शरीर को उत्तम में उत्तम सर्वश्रेष्ठ आकार दिलाये वह कौनसा नाम कर्म ?
११. सत् और असत् के जानने वाले को क्या कहते है ?
१२. अलसिया का समावेश किन जीवों में होता है ?
१३. अलावा गिनते शराबी की तरह बडबडाट करे वह कौनसा दोष ?
१४. जो दूसरों को सहायभूत न बने ऐसा द्रव्य कौनसा ?
१५. जिसका परिणाम सुन्दर हो ऐसे कार्य करनेवाले को क्या कहते हैं ?

**प्रश्न नं. ३ नीचे दिये गये शब्दों के अर्थ लिखो -**

१) महिया २) सुहुमेहिं ३) कम्माणं ४) सपअेसा ५) मअे ६) तिमिर ७) सुविहिं ८) खुद्दो ९) पसम १०
१०) गोयम ११) विराहणाअे १२) वुज्जोअं १३) जाई १४) सव्वगत १५) किलामिया १६) अहियं
१७) सत्तो १८) बायर १९) विसल्ली २०) पसीयंतु

**प्रश्न नं. ४ जोडियाँ लगाओ (सिर्फ 'B' के नंबर लिखो) -** १०

| A | B |
|---|---|
| १) क्षेत्र | १) अभक्ष्य |
| २) पुष्करावर्त मेघ | २) अंगभीर |
| ३) प्रभावशाली | ३) व्दिइन्द्रिय |
| ४) श्री श्रेयांसनाथ | ४) उपशम |
| ५) लोगस्ससूत्र | ५) आकाशास्तिकाय |
| ६) सौम्य | ६) मनुज यक्ष |
| ७) अनेक | ७) पार्श्वनाथ |
| ८) शंख | ८) पुद्गलास्तिकाय |
| ९) चलितरस | ९) नामस्तव |
| १०) क्षुद्र | १०) पराघात |

**प्रश्न नं. ५ निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संख्या में लिखो -** १०

१. इरियावही सूत्र के कुल भेद कितने ?
२. रुपी द्रव्य कितने ?
३. श्रावक के गुण कितने ?
४. अनंतनाथ प्रभु की श्राविकायें कितनी ?
५. पुण्य के कारण रुप कितने शुभ कर्म बंधते हैं ?
६. आयंबिल एकासन कितने मिनिट में कर लेनी चाहिये ?
७. श्री वासुपुज्यस्वामी का आयुष्य कितना ?
८. लोगस्स सूत्र में तीर्थंकरों के कितनें नाम आते हैं ?
९. कायोत्सर्ग में लगते दोष कितने ?
१०. गोपालक के कितनी इन्द्रिय हैं ?

**प्रश्न नं. ६ नीचे के वाक्य सही ( ✓ ) हैं या गलत (×) बताओ -** १०

१. जीवास्तिकाय सर्वव्यापक है ।
२. लोगस्स सुत्र से वर्तमान चोविशी को वंदन होता है ।
३. मघवा और सनतकुमार चक्रवर्ती श्री वासुपुज्यस्वामी के शासन में हुए थे ।
४. आदेय नामकर्म के उदय से जीव सभी को मान्य वचन वाला होता है ।
५. नव परिणीत वधु की तरह सिर नीचा रखे वह खलिण दोष ।
६. सत्कथी याने यथार्थ वस्तु तत्व को देखने वाला हो ।
७. आंख न हो अथवा कमजोर हो तो जयणा (यतना) नहीं पाल सकते ।
८. इरियावही के प्रतिक्रमण से सामान्य शुद्धि और कायोत्सर्ग से विशेष शुद्धि होती है ।
९. प्रत्येक नाम कर्म के उदय से नाभि उपर के मस्तकादि शुभ अवयवों की प्राप्ति होती है ।
१०. श्री चंद्रप्रभु स्वामी चंपापुरी में केवलज्ञान पाये ।

**प्रश्न नं. ७ नीचे के वाक्य किस पृष्ठ पर है वह पृष्ठ नंबर लिखो -** १०

१. प्रतिदिन के जीवन में होती जीव विराधना को समझ कर उससे पीछे हटने के लिये उद्यमशील बनना चाहिये ।
२. जन्म जरा और मृत्यु का क्षय किया है ऐसे जिनो में श्रेष्ठ है ऐसे तीर्थंकरों मेरे उपर प्रसन्न हों ।
३. गुरु के लिये अशाता एंव आर्तध्यान का खुद निमित्त बने हैं, ऐसा सोचकर मन में सतत पश्चाताप कर रहे हैं ।
४. बापू ने एक दिन का उपवास कर डालना चाहिये तो स्वास्थ भी अच्छा रहेगा ।
५. वाणी का सदुपयोग कर प्रभुभक्ति, स्तवना भक्ति में उसे जोडना पडेगा ।
६. केवल जन्म श्रावक या क्रिया श्रावक बनकर नहीं चलेगा परंतु गुण श्रावक बनने के लिये प्रबल पुरुषार्थ करना ही पडेगा ।
७. पुण्य सुंदरता से समझ जायें तो पाप के चक्कर अटक जायें ।
८. इन सभी को सुख देने से हमें सुख मिलता है, दुःख देने से दुःख मिलता है ।
९. जिस तरह बंदरिया का बच्चा माँ के पेट को चिपका हुआ रहता है, वैसे ही दो हड्डियाँ आमने सामने हड्डियों को चिपकी हुई होती है, उसे मर्कट बंध कहते हैं ।
१०. जीव को स्वयं का शरीर भारी या हलका न लगने दे ।

**प्रश्न नं. ८ अपनी भाषा में समझाओ -** १५

१. श्रावक का तीसरा गुण
२) लोगस्स सूत्र मे प्रभु के गुणानुवाद के साथ की गई याचना
३) चलित रस
४) पुण्य की उपादेयता क्यों ?
५) शीतल नाथ प्रभु का संक्षिप्त चरित्र

**उत्तर पत्र नीचे लिखे पते पर भेजिए :**
शत्रुंजय अेकेडमी श्री पद्मप्रभस्वामी जैन मंदिर, स्टेशन रोड, चालिसगाँव - ४२४१०१ जिल्हा : जलगांव,
मो. ९०२८२४२४८४. सही परिणाम और सही जवाब के लिये वेब साईट www.shatrunjayacademy.com